Dr. Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part-II (Hons.)
Paper – 4, Unit-7
Lecture Series :- 59
Date – 02/07/2020

Topic :- Stratified Sampling

यह विधि दो विधियों का सम्मिलित रूप है अर्थात् दैव निदर्शन तथा उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का सम्मिलित रूप है। इसलिए इसे मिश्रित विधि भी कहते हैं। इसमें सबसे पहले समग्र को सजातीय वर्गों में विभाजित किया जाता है फिर प्रत्येक वर्ग में निश्चित संख्या में इकाइयां दैव निदर्शन के आधार पर चुन ली जाती है। इस प्रकार वर्गों के विभाजन तथा प्रत्येक वर्ग से इकाइयों की संख्या निश्चित करने में Purposive Sampling method का उपयोग किया जाता है।

वर्गों का निर्माण

वर्गीय विधि की सफलता वर्गों के उचित चुनाव पर निर्भर करती है। यदि वर्गों का चुनाव उचित रूप से किया गया है तो थोड़ी सी इकाइयां भी प्रतिनिधि सैम्पल का काम कर सकती है। वर्गों के निर्माण में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

i) सबसे पहले अनुसंधान के विषय से संबंधित कौन-कौन से गुण है जिनके आधार पर समग्र का वर्गीकरण किया जा सकता है। सामान्य रूप से पाये जाने वाले गुण- क्षेत्र, आयु, लिंग इत्यादि होते हैं तथा इन्हीं के आधार पर पहले समस्त समूह का वर्गीकृत किया जाता है। वर्गीकरण के आधार पर गुणों का चुनाव में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे समस्या के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हो।

Scanned with CamScanner

2.) प्रत्येक वर्ग का आकार इतना बड़ा हो कि उसमें से इकाइयों को चुनाव दैव निदर्शन विधि द्वारा हो सके। यदि, वर्ग में इकाइयों की संख्या कम होगी, तो दैव निदर्शन का उपयोग करने में कठिनाई होगी।

3) वर्गों का निर्माण इस प्रकार करना चाहिए कि एक वर्ग में आने वाली सभी इकाइयाँ सजातीय तथा समान हों परन्तु वे दूसरे वर्गों की इकाइयों से भिन्न हों।

4) जहाँ तक हो सके प्रत्येक वर्ग से उतनी ही इकाइयाँ चुनी जाये जिस अनुपात में वर्ग की कुल इकाइयाँ समग्र में हैं। इस प्रकार यदि किसी सामाजिक समूह में पढ़े-लिखों का प्रतिशत 75 है, तो सेंपल में भी पढ़े लिखे लोगों के वर्ग से सेंपल की इकाइयाँ 75% ही चुनी जाएगी।

5) वर्ग स्पष्ट तथा निश्चित होने चाहिए जिससे प्रत्येक इकाई किसी न किसी वर्ग में अवश्य आ जाए।

Types of stratified sample :-

i) समानुपातिक वर्गीय निदर्शन :- इस विधि के अनुसार प्रत्येक वर्ग में से इकाइयाँ उसी अनुपात में चुनी जाती है जिस अनुपात में वर्ग की कुल इकाइयाँ समग्र में है।

ii) असानुपातिक वर्गीय निदर्शन :- इस विधि के अनुसार प्रत्येक वर्ग में से समान संख्या में इकाइयाँ चुनी जाती है। इस प्रकार यदि विभिन्न वर्गों में इकाइयाँ समान संख्या में नहीं है तो उनकी संख्या सेंपल में असानुपातिक हो जाएगा इसे नियंत्रित निदर्शन प्रणाली भी कहते है। क्योंकि इसके द्वारा

अंतर वर्गीय तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है।

आनुपातिक वर्गीय निदर्शन :- इस विधि के द्वारा असानुपातिक वर्गीय निदर्शन के दोष दूर किए जाते हैं। इस प्रकार के सैंपल में दोनों सानुपातिक एवं असानुपातिक संख्या में इकाइयां चुनी जाती हैं। परन्तु बाद में अधिक संख्या वाले वर्गों की इकाइयों को अधिक भार प्रदान करके उनका प्रभाव अधिक बढ़ा दिया जाता है। भार प्रायः उसी अनुपात में प्रदान किए जाते हैं, जिस अनुपात में आने वाली इकाइयां कुल समूह में हैं।